नि० कृषि
नि० उद्यान
नि० भू० सं०

पत्रांक–पर्या०/वन (विविध)–12/10, 37 (वि०)/प०व०
बिहार सरकार,
पर्यावरण एवं वन विभाग।

प्रेषक,

अंजनी कुमार सिंह,
मुख्य सचिव, बिहार।

प्रधान सचिव, कृषि कोषांग
22 JAN 2015
बिहार, पटना

सेवा में,

सभी प्रधान सचिव/सचिव, बिहार, पटना।
सभी विभागाध्यक्ष, बिहार।

पटना–15, दिनांक– 19, जनवरी, 2015

विषयः विभागीय बैठकों में PET बोतलों का उपयोग नहीं करने के संबंध में।

महाशय,

बढ़ती जनसंख्या एवं बदलती जीवन–शैली के कारण, पर्यावरण पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है। आम जिन्दगी में इस्तेमाल होने वाले कतिपय ऐसे Non Bio-degradeable उत्पाद हैं जिनका उपयोग पर्यावरण के लिये हानिकारक है। ऐसी ही एक सामग्री प्लास्टिक है, जो पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन चुकी है। भारत सरकार द्वारा 40 माईक्रोन से कम मोटाई के प्लास्टिक थैलों पर तो वैधानिक रूप से प्रतिबंध लगाया जा चुका है, किन्तु PET बोतलों का उपयोग, अभी भी धड़ल्ले से हो रहा है, जिसे सीमित किया जाना पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से अत्यावश्यक है।

2. PET बोतलों का उपयोग, मनुष्य के लिए आर्थिक, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण कारणों से निश्चय ही हानिकारक है।

2.1 PET बोतलों के निर्माण में Bisphenol A (BPA) नामक रसायन का प्रयोग होता है, जो मानव ग्रंथियों के लिए नुकसानदेह बताया गया है।

2.2 PET बोतलों के ढक्कन recycle नहीं हो पाते हैं, एवं इसे जानवरों के द्वारा खाये जाने से, उनके जान को खतरा रहता है। प्रत्येक वर्ष, प्लास्टिक खाने के कारण, 10 लाख से अधिक पशु, पक्षी एवं मछिलियों की मृत्यु होती है।

2.3 एक PET बोतल के निर्माण से 6 Kg CO_2 का उत्सर्जन वायुमण्डल में होता है। इसके अतिरिक्त एक लीटर PET बोतल के निर्माण में, करीब पाँच लीटर पानी का अलग से प्रयोग होता है।

2.4 विश्व के कुल तेल खपत का लगभग 6 प्रतिशत सिर्फ प्लास्टिक निर्माण में होता है।

2.5 कुल कचरे का 4–5 प्रतिशत भाग प्लास्टिक का होता है। यही कचरा बिखर कर नालियों में इकट्ठा होता है, जो नालियों, गटरों, सीवेज डिस्पोजल पाईपों में अवरोध पैदा करता है।

उपरोक्त से स्पष्ट होगा कि PET बोतलों का उपयोग मनुष्य, समाज एवं पर्यावरण, तीनों के लिए अत्यन्त ही हानिकारक है। एक PET बोतल का वजन औसतन 30 ग्राम होता है। अगर 100 व्यक्तियों की बैठक में PET बोतल का इस्तेमाल किया गया, तो केवल PET बोतल मात्र से, 18 किलो CO_2 का उत्सर्जन होगा, तीन किलो Non Bio-degradeable कचरे का उत्पादन होगा, तथा 500 लीटर अतिरिक्त पानी का अनावश्यक व्यय होगा।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में अनुरोध है, कि प्रारंभिक तौर पर, पर्यावरण के हित को ध्यान में रखते हुए, विभागीय बैठकों में PET बोतलों का इस्तेमाल नहीं किया जाय। उसके स्थान पर फ्लास्क एवं शीशा/ स्टील के गिलास का उपयोग करने की कृपा की जाय। उक्त आशय की सूचना सभी क्षेत्रीय पदाधिकारियों को देते हुए, इसका अनुपालन सुनिश्चित कराया जाय।

विश्वासभाजन,

16/11/15

अंजनी कुमार सिंह,
मुख्य सचिव, बिहार।